

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 4: राजा कंस के अत्याचार

14 September 2026



तानाशाह के हाथों से छूटकर, भगवान् की योगमाया अष्टभुजा उज्ज्वल देवी बनकर गगनमण्डल में विराजमान हो जाती है और उद्धोषणा करती है कि कंस का काल पहले ही अवतरित हो चुका है — और सम्पूर्ण दशम स्कन्ध की धारा उसी वाणी पर मुड़ जाती है।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पावन कथाओं और शिक्षाओं की एक भक्तिपूर्ण यात्रा। पिछले अध्याय में परम भगवान् अर्धरात्रि में चतुर्भुज रूप में प्रकट हुए, वसुदेव और देवकी द्वारा स्तुत हुए, और फिर मार्ग देती यमुना को पार कर गोकुल पहुँचाए गए, जहाँ वसुदेव ने उन्हें यशोदा के पास लिटाकर नवजात कन्या को लेकर लौट आए। यह चतुर्थ अध्याय ठीक उसी क्षण से आरम्भ होता है जब वसुदेव की जंजीरें पुनः बँध जाती हैं। पहरेदार शिशु के रुदन से जाग उठते हैं; कंस कारागार की ओर दौड़ता है; देवकी उस छोटी कन्या के लिए व्यर्थ ही याचना करती हैं; और, ठीक उसी क्षण जब अत्याचारी उसका वध करने का प्रयास करता है, वह शिशु उसके हाथों से फिसल जाती है, आठ भुजाओं वाली देवी के रूप में आकाश में उठ जाती है, और घोषणा करती है कि उसका संहारक पहले ही जन्म ले चुका है। इसके पश्चात् और भी विचित्र घटना घटती है: कंस, पश्चात्ताप से व्याकुल होकर, अपने बन्धियों को मुक्त कर देता है और पश्चात्ताप तथा ज्ञान की बातें करता है — किन्तु उसके दैत्य मन्त्री उसे पुनः क्रूरता की ओर मोड़ देते हैं, जो समस्त भूमि पर साधुजनों और निर्दोषों को सताने का संकल्प करते हैं।

अध्याय-पारेचय

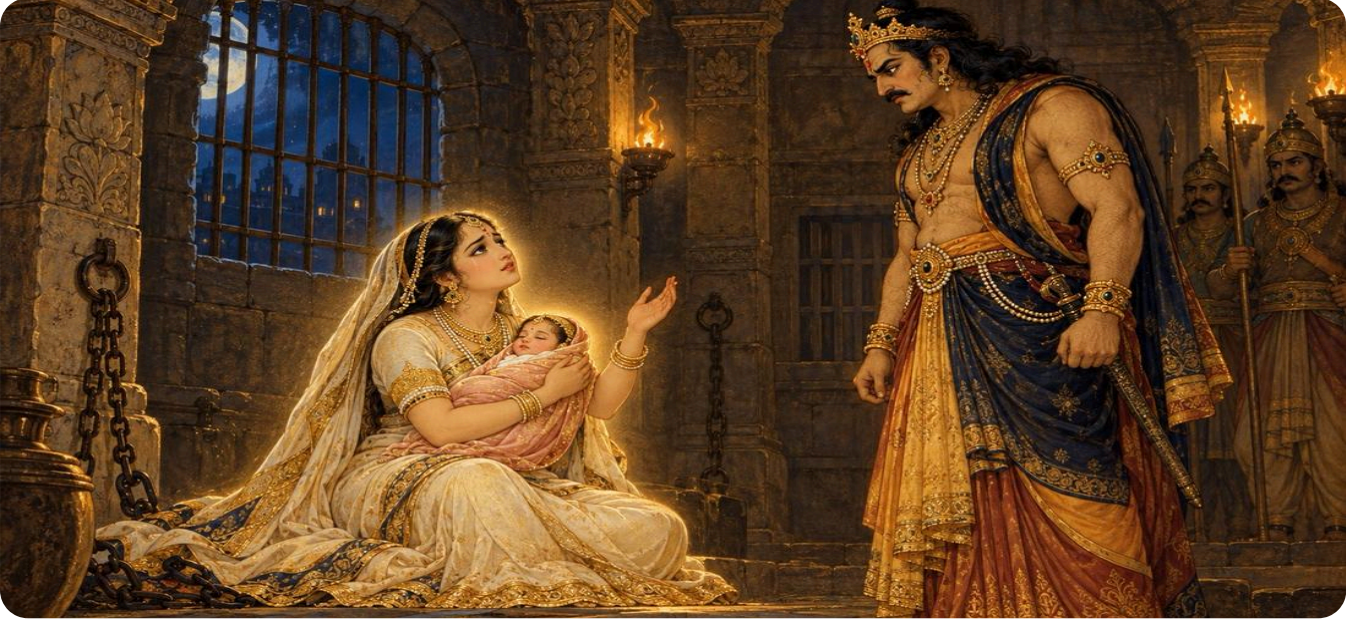
- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 4 (चतुर्थ अध्याय)
- अध्याय-शीर्षक: राजा कंस के अत्याचार
- मुख्य वक्ता: श्रीशुकदेव गोस्वामी (राजा परीक्षित से कहते हुए); और आगे सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य के ऋषियों से कहा गया
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित (शुकदेव की कथा के भीतर); नैमिषारण्य में एकत्र ऋषिगण
- मुख्य स्थल: मथुरा में कंस का कारागार-भवन; ऊपर खुला आकाश; तथा कंस का मन्त्रणा-कक्ष
- केन्द्रीय विषय: योगमाया का आठ भुजाओं वाली देवी के रूप में पलायन तथा उसकी भविष्यवाणी; कंस का क्षणिक पश्चात्ताप तथा शाश्वत आत्मा पर उसका उपदेश; तथा दैत्यों का साधुजनों को सताने का संकल्प
- मुख्य श्लोक-परिधि: स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 1–46
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पिछले अध्याय का सन्दर्भ

तृतीय अध्याय में परम भगवान् अर्धरात्रि में वसुदेव और देवकी के समक्ष अपनी चतुर्भुज महिमा में प्रकट हुए, उनकी स्तुति ग्रहण की, अपने पूर्व अवतरणों का स्मरण कराया, और फिर एक साधारण शिशु बन गए। योगमाया के प्रभाव से पहरेदार सो गए और द्वार स्वयमेव खुल गए; वसुदेव शिशु को बाढ़ग्रस्त यमुना के पार, शेष के फणों से सुरक्षित, ले गए, उन्हें गोकुल में यशोदा की शय्या पर लिटाया, और यशोदा की नवजात कन्या को लेकर लौट आए, जिसे उन्होंने अपनी जंजीरें पुनः बाँधने से पूर्व देवकी की शय्या पर रखा। यह अध्याय उसी घड़ी से कथा को आगे बढ़ाता है।

पहरेदार जाग उठते हैं और देवकी की याचना

वसुदेव के लौटते ही बाहरी द्वार तथा भीतरी कक्षों के द्वार पहले की भाँति बन्द हो गए। तभी एक नवजात का रुदन सुनाई दिया, और कारागार के पहरेदार चौंककर जाग उठे। कंस के पास शीघ्रता से जाकर उन्होंने देवकी के शिशु के जन्म का समाचार दिया — वही आठवाँ प्रसव जिसकी वह इतनी व्याकुलता से प्रतीक्षा कर रहा था। भय से शय्या से उठकर, और इस शिशु को अपनी मृत्यु समझकर, राजा लड़खड़ाते कदमों और बिखरे केशों के साथ सूतिका-गृह की ओर दौड़ा।



तेजस्विनी देवकी अपनी कन्या को छाती से लगाए, अपने भाई कंस से उस असहाय कन्या-शिशु को बरख्श देने की याचना करती हैं (श्लोक 4-7)।

वहाँ दीन किन्तु तेजस्विनी देवकी ने अपने भाई से अत्यन्त करुणापूर्वक विनती की। उन्होंने कहा कि यह कन्या उसके लिए पुत्रवधू के समान है, और एक कन्या-शिशु का वध करना उचित नहीं। वह पहले ही अग्नि-सदृश तेजस्वी अनेक शिशुओं का वध कर चुका है, विधि की प्रेरणा से; अब यह एक अकेली, असहाय कन्या उसे दे दी जाए। वह उसकी ही छोटी बहन है, जिसके पुत्र मारे जा चुके हैं और जो इसीलिए दुखी है; उसे यह अन्तिम सन्तान अवश्य दे देनी चाहिए।

योगमाया का पलायन तथा उसकी भविष्यवाणी

अत्यन्त असहाय स्त्री के समान रोती और अपनी कन्या को छाती से लगाए हुए, देवकी ने राजा से याचना की; किन्तु उस दुष्ट ने उन्हें कठोरता से झिड़ककर शिशु को उनके हाथों से छीन लिया। फिर भी जिस क्षण उसने उसे शिला पर पटकना चाहा, वह शिशु उसकी पकड़ से फिसल गई — क्योंकि यह कोई साधारण शिशु नहीं, अपितु स्वयं भगवान् की योगशक्ति थी — और तत्क्षण आकाश में उठ गई।

सा तद्धस्तात् समुत्पत्य सद्यो देव्यम्बरं गता । अदृश्यतानुजा विष्णोः सायुधाष्टमहाभुजा ॥ ९ ॥

sā tad-dhastāt samutpatya sadyo devy ambaram gatā adṛśyatānujā viṣṇoḥ sāyudhāṣṭa-mahābhujā

अर्थ: उसके हाथ से फिसलकर वह तत्काल आकाश में उठ गई और वहाँ विष्णु की छोटी बहन के रूप में प्रकट हुई — आठ महाभुजाओं वाली देवी, जिनकी प्रत्येक भुजा में एक शस्त्र था। (स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 9)

वहाँ वह प्रकट हुई, दिव्य मालाओं, वस्त्रों, चन्दन तथा रत्नाभूषणों से अलंकृत, अपनी आठ भुजाओं में धनुष, शूल, बाण, ढाल, तलवार, शंख, चक्र तथा गदा धारण किए हुए। सिद्धों, चारणों, गन्धर्वों, अप्सराओं, किन्नरों तथा नागों द्वारा स्तुत होकर, जिन्होंने उसकी पूजा-सामग्री अर्पित की, उसने विस्मित राजा से कहा।

किं मया हतया मन्द जातः खलु तवान्तकृत् । यत्र क्व वा पूर्वशत्रुर्मा हिंसीः कृपणान् वृथा ॥ १२ ॥

kiṁ mayā hatayā manda jātaḥ khalu tavānta-kṛt yatra kva vā pūrva-śatrur mā hiṁsīḥ kṛpaṇān vṛthā

अर्थ: हे मूर्ख, मुझे मारकर तुझे क्या मिलेगा? जो तेरा अन्त करेगा — तेरा पूर्वजन्मों का शत्रु — वह कहीं न कहीं पहले ही जन्म ले चुका है।
व्यर्थ ही अन्य असहाय शिशुओं का वध मत कर। (स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 12)

इस प्रकार उसे चेतावनी देकर, भगवान् की वह दिव्य माया चली गई और पृथ्वी पर अपना स्थान ग्रहण किया, जहाँ वह अनेक नामों वाले मन्दिरों में अनेक नामों से सदैव पूजी जाती है।

इति प्रभाष्य तं देवी माया भगवती भुवि । बहुनामनिकेतेषु बहुनामा बभूव ह ॥ १३ ॥

iti prabhāṣya taṁ devī māyā bhagavatī bhuvī bahu-nāma-niketeṣu bahu-nāmā babhūva ha

अर्थ: उससे इस प्रकार कहकर, वह दिव्य देवी माया पृथ्वी पर विराजमान हो गई, जो अनेक नामों वाले मन्दिरों में अनेक नामों से पूजी जाती है।
(स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 13)

कंस का पश्चात्ताप तथा आत्मा का ज्ञान

देवी की वाणी से विस्मित होकर, कंस ने तत्काल वसुदेव और देवकी को उनकी जंजीरों से मुक्त कर दिया और उनसे अप्रत्याशित विनम्रता से बात की। उसने स्वीकार किया कि, अपने ही बच्चों को खा जाने वाले राक्षस के समान, उसने उनके इतने पुत्रों का वध किया, पापी था वह; कि करुणा त्यागकर और अपने ही स्वजनों को अस्वीकार करके, वह श्वास लेते हुए भी मृतक के समान था, और ब्रह्महत्यारे के समान केवल घोरतम नरकों में ही गिर सकता था। उसने देवताओं और मनुष्यों की वाणी पर विश्वास किया था, उसने विलाप किया, और उसी विश्वास के कारण निर्दोष शिशुओं की हत्या कर बैठा।





देवी की वाणी से विस्मित कंस वसुदेव और देवकी को मुक्त करता है, उनके चरणों में रोता है, और अमर आत्मा की बात करता है (श्लोक 14-24)।

फिर, उल्लेखनीय रूप से, पश्चात्तापी राजा ने शोकाकुल माता-पिता को शाश्वत आत्मा के उपदेश से सान्त्वना दी। उन्हें अपने पुत्रों के लिए शोक नहीं करना चाहिए, उसने कहा, क्योंकि प्रत्येक प्राणी वही काटता है जो उसने बोया है, और कोई भी सदैव अथवा एक ही स्थान पर नहीं रहता, सभी विधि के अधीन हैं। जैसे मिट्टी के घट पृथ्वी पर प्रकट होकर नष्ट हो जाते हैं जबकि पृथ्वी स्वयं अपरिवर्तित रहती है, वैसे ही देह आती-जाती है जबकि भीतर का आत्मा अछूता रहता है।

भुवि भौमानि भूतानि यथा यान्त्यपयान्ति च । नायमात्मा तथैतेषु विपर्येति यथैव भूः ॥ १९ ॥

bhuvi bhaumāni bhūtāni yathā yānty apayānti ca nāyam ātmā tathaiteṣu viparyeti yathaiva bhūḥ

अर्थ: जैसे मिट्टी से बनी वस्तुएँ पृथ्वी पर उत्पन्न होकर नष्ट हो जाती हैं, वैसे ही देह प्रकट होकर विलीन हो जाती है; किन्तु उनके भीतर का आत्मा परिवर्तित नहीं होता, ठीक जैसे पृथ्वी स्वयं परिवर्तित नहीं होती। (स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 19)

कंस ने समझाया कि केवल अज्ञान के कारण ही कोई आत्मा को देह से एक मान लेता है, और उसी भ्रम से 'मेरा' तथा 'पराया' का भाव, संयोग तथा वियोग का भाव उत्पन्न होता है, जो आत्मा को जन्म-मरण में बाँधे रखता है। उसने वसुदेव और देवकी से अपनी दुष्टता को क्षमा करने की याचना की, क्योंकि साधुजन सदैव दुखियों पर दयालु होते हैं; और अश्रुधारा से मुख भिगोए हुए उसने उनके चरण पकड़ लिए। देवी की भविष्यवाणी से आश्चस्त होकर, उसने उन्हें मुक्त कर दिया। देवकी ने अपने पश्चात्तापी भाई को क्षमा कर दिया और अपना क्रोध त्याग दिया, और वसुदेव ने मुस्कराते हुए स्वीकार किया कि 'मैं यह देह हूँ' यह भाव अज्ञान से उत्पन्न होता है, और शोक, भय, लोभ तथा अभिमान से आच्छादित जन यह नहीं देख पाते कि यह भगवान् ही हैं, जो काल-रूप में प्राणियों को प्राणियों के विरुद्ध चलाते हैं।

दैत्यों को कुत्सेत मन्त्रणा

इस प्रकार शान्त होकर और अनुमति पाकर, कंस अपने महल को लौट गया। किन्तु जब रात्रि बीत गई, तब उसने अपने मन्त्रियों को बुलाकर उन्हें वह सब बताया जो योगमाया ने प्रकट किया था। अपने स्वामी को सुनकर, वे दैत्य — देवताओं के शत्रु, द्वेषी और बुद्धि से हीन — एक भयंकर योजना पर बल देने लगे: वे नगरों, गाँवों तथा गोशालाओं में दस दिन अथवा उससे कम आयु के प्रत्येक शिशु का वध कर देंगे। उन्होंने देवताओं को कायर कहकर उपहास किया, विष्णु, शिव, इन्द्र तथा ब्रह्मा की शक्ति का तिरस्कार किया, और कंस पर दबाव डाला कि वह उन्हें विष्णु का, जहाँ कहीं वे शिशु रूप में छिपे हों, वध करने की अनुमति दे। एक शत्रु जिसे अनदेखा किया जाए, उन्होंने चेतावनी दी, उखाड़ना असम्भव हो जाता है, ठीक उस रोग के समान जिसकी उपेक्षा तब तक की जाए जब तक वह जड़ न पकड़ ले।



कंस के दैत्य मन्त्री उसे निर्दोषों का वध करने तथा ब्राह्मणों, गौओं और यज्ञ पर प्रहार करने के लिए उकसाते हैं, जिनमें भगवान् निवास करते हैं (श्लोक 30-42)।

फिर उनकी मन्त्रणा एक और भी अन्धकारमय तर्क की ओर मुड़ी। विष्णु, उन्होंने कहा, देवताओं की जड़ हैं, और वे वहीं निवास करते हैं जहाँ सनातन धर्म पाला जाता है — जो वेद, गौ, ब्राह्मण, तप तथा यज्ञ से पोषित होता है। इन पर प्रहार करना, उन्होंने तर्क दिया, स्वयं भगवान् पर प्रहार करना था।

विप्रा गावश्च वेदाश्च तपः सत्यं दमः शमः । श्रद्धा दया तितिक्षा च क्रतवश्च हरेस्तनूः ॥ ४१ ॥

viprā gāvaś ca vedāś ca tapaḥ satyaṁ damaḥ śamaḥ śraddhā dayā titikṣā ca kratavaś ca hares tanūḥ

अर्थ: ब्राह्मण तथा गौएँ, वेद, तप, सत्य, इन्द्रिय-निग्रह तथा मन का संयम, श्रद्धा, दया, सहनशीलता तथा यज्ञ — ये सब भगवान् हरि के ही अंग, उनके ही मूर्त रूप हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 41)

चूँकि भगवान् समस्त देवताओं के स्वामी, दैत्यों के शत्रु, तथा प्रत्येक हृदय के अन्तर्यामी हैं — वह स्रोत जिनसे शिव और ब्रह्मा तक उत्पन्न होते हैं — इसलिए दैत्यों ने निष्कर्ष निकाला कि ऋषियों का उन्मूलन ही विष्णु पर प्रहार का सबसे निश्चित उपाय है।

कंस का साधुजनों को सताने का आदेश

इन दुष्ट मन्त्रियों से मन्त्रणा करके, दुर्बुद्धि राजा, जो पहले ही मृत्यु के फंदे में जकड़ा हुआ था, ब्राह्मणों के विनाश को अपने ही हित के लिए उचित मान बैठा। उसने दैत्यों को — जो कोई भी रूप धारण कर सकते थे और दूसरों को सताने में आनन्द लेते थे — आदेश दिया कि वे प्रत्येक दिशा में साधुजनों पर अत्याचार करें, और फिर अपने महल में चला गया। रज तथा तम से अभिभूत, अपने विनाश के निकट, वे दैत्य साधुजनों के विरुद्ध क्रूरता में जुट गए।



मृत्यु के फंदे में जकड़ा कंस रूप बदलने वाले दैत्यों को प्रत्येक दिशा में साधुजनों पर अत्याचार करने का आदेश देता है (श्लोक 43-46)।

श्रीशुकदेव इस अध्याय का समापन एक गम्भीर चेतावनी से करते हैं, जो प्रत्येक युग के लिए सत्य है: एक श्रेष्ठ आत्मा के विरुद्ध किया गया अपराध मनुष्य की प्रत्येक प्रिय वस्तु को नष्ट कर देता है।

आयुः श्रियं यशो धर्मं लोकानाशिष एव च । हन्ति श्रेयांसि सर्वाणि पुंसो महदतिक्रमः ॥ ४६ ॥

āyuh śriyam yaśo dharmam lokān āśiṣa eva ca hanti śreyāṁsi sarvāṇi puṁso mahad-atikramah

अर्थ: एक महान् आत्मा के विरुद्ध किया गया अपराध मनुष्य की आयु, ऐश्वर्य, यश तथा धर्म, उसके उच्च लोकों के अधिकार तथा उसकी अभीष्ट कामनाओं को — वस्तुतः उसके प्रत्येक कल्याण को — नष्ट कर देता है। (स्कन्ध 10, अध्याय 4, श्लोक 46)

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

1. भगवान् की शक्ति को बल से पकड़ा नहीं जा सकता। जिस क्षण कंस उस दिव्य शिशु को पकड़ता है, वह फिसलकर उसकी पहुँच से परे उठ जाती है। कोई अत्याचारी भगवान् की शक्ति को न पकड़ सकता है न नष्ट कर सकता है; दिव्यता के विरुद्ध हिंसा केवल अपनी ही असहायता को प्रकट करती है (श्लोक 7-9)।

2. विधि उसकी घोषणा कर देती है जिसे कोई बल रोक नहीं सकता। योगमाया की भविष्यवाणी — कि संहारक पहले ही जन्म ले चुका है — दर्शाती है कि दिव्य योजना अपने ही नियमों पर उद्धाटित होती है; दुष्टों के भयभीत प्रयास उसे रोक नहीं सकते (श्लोक 12-13)।

3. आत्मा देह की मृत्यु से अछूता रहता है। कंस के मुख से भी वह महान् उपदेश निकलता है कि आत्मा, अपने ऊपर आते-जाते घटों के नीचे की अपरिवर्तित पृथ्वी के समान, कभी वस्तुतः मारा नहीं जाता। इस सत्य के प्रकाश में गए हुआओं के लिए शोक मृदु हो जाता है (श्लोक 18-22)।

4. स्थिरता के बिना पश्चात्ताप टिकता नहीं। कंस रोता है, अपने बन्धियों को मुक्त करता है, और ज्ञानी के समान बोलता है — फिर भी दुष्ट मन्त्रणा की एक ही रात्रि सब कुछ नष्ट कर देती है। सच्चे परिवर्तन की रक्षा करनी होती है, अन्यथा कुसंग शीघ्र ही हृदय को पुनः अपने वश में कर लेता है (श्लोक 23-30)।

5. धर्म ब्राह्मणों, गौओं, वेद तथा यज्ञ में निवास करता है। दैत्य तक यह पहचानते हैं कि भगवान् वहीं निवास करते हैं जहाँ इनका सम्मान होता है। जिसे वे नष्ट करने का षड्यन्त्र रचते हैं, उसी को संजोने और रक्षा करने के लिए भक्त आह्वान पाता है (श्लोक 39-41)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

इस अन्धकारमय अध्याय में एक विचित्र करुणा छिपी है। एक काँपती हुई घड़ी के लिए, कंस तक सत्य का उपदेश बन जाता है — अपने बन्धियों को मुक्त करता है, उनके चरणों में रोता है, अमर आत्मा की बात करता है। यह उस झलक का दर्शन है जो वह हो सकता था। और फिर मन्त्री आते हैं, और वह प्रकाश बुझ जाता है। यह विरोधाभास हमारे अपने हृदय के समक्ष रखा गया दर्पण है: कितनी बार हम भी सच्चाई की ओर प्रेरित होते हैं, अधिक कोमल और सत्यनिष्ठ होने का संकल्प करते हैं, और फिर किसी भटकी हुई वाणी, किसी परिचित प्रलोभन को अपने पुराने मार्गों पर लौटा ले जाने देते हैं। यह अध्याय चुपचाप हमसे कहता है कि उन कोमल क्षणों की रक्षा करें जब कृपा हमें छूती है, उस संग को धारण करें जो हमारे श्रेष्ठ संकल्पों को स्थिर रखता है, और स्मरण रखें कि जिसे दुष्ट नष्ट करना चाहते हैं — साधुजन, शास्त्र, निर्दोष, सब जो पवित्र है — ठीक उसी की रक्षा और प्रेम करना भक्त का कर्तव्य है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, उस क्षण को स्मरण करें जब आपका हृदय भलाई की ओर कोमल हुआ था — अधिक दयालु, अधिक सत्यनिष्ठ, अधिक भक्तिमय होने का संकल्प। उसे विलीन होने देने के बजाय, उसे लिख लें अथवा सस्वर कहें, और दिन के अन्त से पूर्व उसे सम्मान देने के लिए एक छोटा-सा कार्य चुनें। उस संकल्प की संदेह तथा आदत के “मन्त्रियों” से रक्षा करें। आरम्भ करते समय जपें: “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।”

उपसंहार

दशम स्कन्ध का चतुर्थ अध्याय एक ही तेजोमय क्षण पर मुड़ता है: जिस शिशु का कंस वध करना चाहता है, वह उसके हाथों से फिसलकर आठ भुजाओं वाली देवी के रूप में उठ जाती है, यह घोषणा करते हुए कि उसका अन्त पहले ही जन्म ले चुका है। उसी क्षण अत्याचारी का सम्पूर्ण आतंक शक्तिहीन प्रकट हो जाता है। एक क्षण के लिए कंस तक परिवर्तित हो जाता है, अपने बन्धियों को मुक्त करता है और अविनाशी आत्मा का उपदेश देता है; किन्तु उसके दैत्य मन्त्री शीघ्र ही उसे पुनः क्रूरता में खींच ले जाते हैं, और वह समस्त भूमि पर साधुजनों का उत्पीड़न आरम्भ

करा देता है। अध्याय एक ऐसी चेतावनी के साथ समाप्त होता है जो युगों तक गूँजती है — कि पवित्र के विरुद्ध हिंसा अपराधी के प्रत्येक कल्याण को निगल जाती है। फिर भी, स्वयं भगवान् अब गोकुल में सुरक्षित विराजमान हैं, और ब्रज का आनन्द आरम्भ होने ही वाला है। आने वाले अध्यायों में, गोपों का वह शिशु उन लीलाओं का आरम्भ करेगा जो इस समस्त अन्धकार को प्रकाश में बदल देती हैं।

श्रीमद्भागवतम् का यह दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

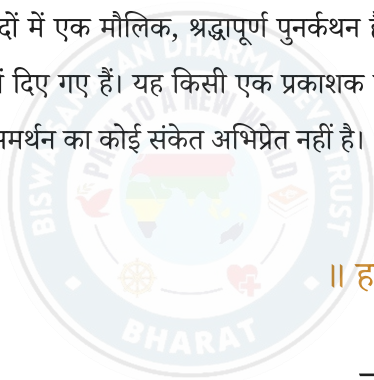
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ तथा आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, सम्पूर्ण), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), चतुर्थ अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · बिस्वा सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी और लिप्यन्तरण में दिए गए हैं तथा उनके अर्थ सारांश रूप में दिए गए हैं। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद अथवा टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक द्वारा किसी सम्बद्धता अथवा समर्थन का कोई संकेत अभिप्रेत नहीं है।



॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-4-atrocities-of-king-kamsa-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान · कल्कि अवतार इंटरनेशनल · बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट